'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 18 | 04 दिसम्बर, 2018 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'सबक सिखाएं, अधिकतम जिताएं'

7 दिसम्बर को राजस्थान में विधानसभा चुनाव के लिए मतदान है। दोनों ही मुख्य राजनीतिक दलों ने टिकट वितरण में इस बार हमारे समाज की उपेक्षा की है। भाजपा ने जहां पहले की अपेक्षा कम टिकटें दी हैं वहीं कांग्रेस ने तो अपेक्षाएं जगाकर उन पर पानी फेरा है। लेकिन राजनीतिक पार्टियों की इस उपेक्षा के बावजूद विभिन्न राजनीतिक दलों की टिकटों एवं निर्दलीयों सहित 200 में से लगभग 50 विधानसभा सीटों पर हमारे समाज के प्रत्याशी अपनी गंभीर दावेदारी प्रस्तुत कर रहे हैं। इन 50 में से 7 सीटें ही ऐसी हैं जहां पर हमारे समाज के ही मजबूत प्रत्याशी आमने-सामने हैं, यहां हमें विशेष सावधानी बरतनी है कि कहीं आपस की लड़ाई में तीसरा नहीं निकल जाए। शेष सीटों पर हमें एकतरफा मतदान कर हमारे प्रत्याशी को मजबूत करना चाहिए साथ ही हमारे सम्पर्क वाले अन्य समाजों से भी इस हेतु सहयोग मांगना चाहिए। यदि विधानसभा में हमारी संख्या विगत विधानसभा से अधिक होती है तब ही राजनीतिक पार्टियों के प्रति हमारे आक्रोश का परिणाम निकलेगा अन्यथा हमारी इसी प्रकार उपेक्षा होती रहेगी। इसलिए आए सभी योजना बनाकर अपने प्रत्याशी को जिताने में प्रवृत हो। आज 4 दिसम्बर हो चुका है, मात्र तीन दिन बचे हैं हमारे पास, इनका सभी प्रकार के व्यक्तिगत आग्रह, दुराग्रह, नाराजगी, पसंदगी भूलकर अगले 5 वर्ष के लिए राजस्थान विधानसभा के हमारे समाज के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए उपयोग करे। यही समाज की मांग है और समाज की मांग सदैव व्यक्ति की मांग से बड़ी होती है। इसलिए व्यक्तिगत मांगों को दरकिनार कर समष्टिगत मांग को प्रबल बनाएं। यदि इस अवसर का उपयोग हम हमारे व्यक्तिगत आग्रह, दुराग्रह, पसंद, नापसंद, मित्रता, नाराजगी को निभाने के लिए करेंगे तो वर्तमान के राजनीतिक दौर में व्यक्ति ही बने रहेंगे, समाज रूप में स्थापित नहीं हो पाएंगे। इसलिए आएं, हम सब मिलकर इस अवसर का समाज रूप में सद्पुयोग करें। जहां हमारा मजबूत प्रत्याशी नहीं है वहां भी समाज रूप में अपनी उपस्थिति दिखाने के लिए योजनाबद्ध रूप में एकतरफा मतदान करें।

महावीर सिंह सरवड़ी
श्री प्रताप फाउंडेशन

वालुकड़ा में बालक मा.प्र. शिविर

गुजरात में बालकों का मा.प्र.शि. 10 से 16 नवम्बर तक भावनगर के पास वालुकड़ा गांव की हाई स्कूल में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संपन्न हुआ। गुजरात क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची के संचालन में हुए इस शिविर में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास भी उपस्थित रहे एवं अर्थबोध, प्रवचन, घट चर्चा आदि कार्यक्रमों में निर्देशन किया। शिविर में महेसाणा, भैंसाणा, ऊंझा, अहमदाबाद शहर, काणेटी, साणंद, धोलेरा, वल्लभीपुर, आंबणी, भावनगर शहर, मोरचंद, थलसर, सामपुरा, नारी, अवणिया, खड़सलिया, तलाजा आदि स्थानों से लगभग 125 शिविरार्थियों ने 7 दिन तक नियमित रूप से संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा क्षात्रधर्म का प्रशिक्षण लिया।

शिविर के दौरान 13 नवम्बर की शाम को स्थानीय सहयोगियों का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें माननीय संघ प्रमुख श्री का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सभी शिविरार्थी 9 नवम्बर की रात तक पहुंच गए थे एवं 10 को प्रातःकालीन वंदना के साथ शिविर प्रारम्भ हुआ।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'संघर्ष प्रियता क्षत्रिय का विशेष गुण'

आज पुराने जमाने जैसे युद्ध नहीं हैं लेकिन संघर्ष की कोई कमी नहीं है। अच्छे और बूरे का संघर्ष आज भी चल रहा है और द्रुत गति से बढ़ता ही जा रहा है। इस संघर्ष में सतोगुणीय भाव से प्रवृत्त होना हमारे लिए परमेष्टिगत मांग है, संघर्ष प्रियता क्षत्रिय का विशेष गुण रहा है। हमें यदि क्षत्रिय कहलाने में, राजपूत कहलाने में, दरबार कहलाने में गर्व होता है तो उन गुणों से भी प्यार होना चाहिए जिनके कारण ऐसा संभव है। उन गुणों को प्राप्त करने की तड़फ भी होनी चाहिए। संघ उस तड़फ का परिणाम है और उस तड़फ को शांत करने का उपाय है।

सब कुछ करते हुए भी केन्द्र में समाज होना चाहिए। समाज और राष्ट्र में कोई भेद नहीं है। जीवन भर हस्तिनापुर की बात करने वाले भीष्म पितामह ने भी अपने अंतिम समय के उपदेश में कहा कि क्षात्रधर्म सृष्टि का आदिधर्म है। क्षत्रिय यदि अपने धर्म पर आरूढ़ नहीं तो संसार में सुख समृद्धि नहीं आ सकती। क्षत्रिय यदि अपने धर्म का पालन न करे तो दूसरे किसी धर्म का पालन संभव नहीं। लेकिन आज हम वैसे क्षत्रिय नहीं है कि क्षात्र धर्म का पालन कर सकें लेकिन वे क्षमताएं हासिल करने की ओर प्रवृत तो हो सकते हैं।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

नारोली में बालिका मा.प्र. शिविर

संघ के बनासकांठा प्रांत के नारोली में 11 से 17 नवम्बर तक बालिका माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन जागृति बा हरदास का बास ने उर्मिला बा, नयन बा आदि के सहयोग से किया। संघ के वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा का भी पूरे शिविर में सानिध्य हासिल हुआ। शिविर में गुजरात के सात जिलों के नारोली, शेराऊ, ताखुआ, करबूण, सवराखा, वाघासण, पीलुड़ा, वलादर, केसरगांव, कुभारा, भापी, भडोदर, लोरवाड़ा, लेड़ाऊ, चारड़ा, चालवा, खानपुर, जादला, डेल, सेदला, जेतड़ा, घोड़ासर, ऊटवेलिया, राह, डुवा, भोरडू, उदराणा, थराद, ईढ़ाटा, ढीमा, लिबोणी, धानेरा, कुड़ा, नांदला, जाखड़ी, अहमदाबाद, सूरत, भावनगर, काणेटी, सुरेन्द्रनगर, सांढखाखरा आदि गांवों की 270 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में 16 नवम्बर को स्नेहमिलन रखा गया जिसमें समाज बंधुओं के अलावा माताएं, बहनें भी शामिल हुईं एवं शिविर के प्रत्यक्ष दर्शन किए। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने शिविर में बालिकाओं को नारी धर्म, गीता संदेश, यज्ञ, वर्तमान समय में स्वधर्म की मान्यता एवं जीवन के उद्देश्य के बारे में विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में बताया। विदाई के समय शिविर संचालिका ने संघ प्रमुख श्री की तरफ से विदाई देते हुए कहा कि शिविर का प्रारम्भ एवं समापन हो सकता है लेकिन शिविर में दिया गया विचार अनादि एवं अनंत है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

समस्या और समाधान दोनों शब्द एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। समस्या जहां समाप्त होना शुरू होती है वहीं से समाधान प्रारम्भ होता है। यह व्यक्ति के स्तर पर निर्भर करता है कि वह अपनी यात्रा समस्या पर ही रोके रखता है या समाधान की ओर गतिमान करता है। हम सामान्य जन समस्या को समस्या मानकर हौव्वा बनाते हैं वहीं महापुरुष तुरन्त उसके समाधान की ओर गतिमान होते हैं। हम सामान्य जन समस्या के आने पर हक्के-बक्के रह जाते हैं। हमारी जीवन यात्रा एकदम से अवरुद्ध सी हो जाती है वहीं महापुरुषों के लिए हर समस्या सामान्य जीवन घटना जैसी ही होती है और वे उसे तुरन्त समाधान की ओर धकेलते हैं। साथ ही वे किसी का इंतजार नहीं करते बल्कि स्वयं उस समाधान में प्रवृत्त होते हैं। पूज्य तनसिंह जी के जीवन में भी ऐसी अनेक घटनाएं घटी जब उन्होंने तत्परता से हर समस्या को समाधान की ओर प्रवृत्त किया। साथ ही इस समाधान में वे क्या कर सकते हैं वह करना प्रारम्भ कर दिया। ऐसी ही एक घटना 1965 में कालवी में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर की है। इस शिविर में वे कार्यालय में बैठे थे एवं वर्तमान संघ प्रमुख श्री उनके पास थे। तभी सूचना मिली कि निकट में एक घर में आग लग गई है। पूरे शिविर को आग बुझाने के लिए भेजा गया एवं स्वयं तनसिंह जी भी वहां पहुंचे। उन्होंने एक तगारी लेकर आग में मिट्टी डालनी प्रारम्भ की। किसी ने आकर उनसे तगारी ले ली तो वे अपना कमीज खोल उसमें मिट्टी भर कर डालने लगे। किसी ने आकर उनसे कमीज भी लेनी चाहा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारे कमीज नहीं है क्या? अर्थात मेरी कमीज लेने की अपेक्षा अपनी कमीज उतारकर समाधान का हिस्सा बनो। हम प्रायः ऐसा ही व्यवहार करते हैं। आग लगने पर आग का हौवा खड़ा करते हैं, चिल्लाते हैं जबकि आवश्यकता यह है कि हम हमारी तरफ से यथायोग्य समाधान का हिस्सा बनें। समस्या का इलाज समाधान की ओर बढ़ने से होता है और जागरूक लोग सदैव समाधान का हिस्सा बनते हैं।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

जीव-विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध कैरियर निर्माण के क्षेत्रों पर चर्चा के क्रम में अब तक हम फार्मेसी पैरामेडिकल, नर्सिंग तथा अनुप्रयुक्त विज्ञान क्षेत्रों में उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कर चुके हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए हम कुछ अन्य क्षेत्रों की भी सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे, जो जीव-विज्ञान वर्ग के छात्रों हेतु उपलब्ध है।

(5) ऑप्टोमेट्री (Optometry) : यह नेत्रों की देखभाल व चिकित्सा से संबंधित क्षेत्र है। इसके अन्तर्गत बैचलर इन ऑप्टोमेट्री तथा मास्टर्स इन ऑप्टोमेट्री कोर्सेज उपलब्ध हैं। इनके पश्चात् डॉक्टरेट स्तर की डिग्री भी इस क्षेत्र में उपलब्ध है। ऑप्टोमेट्रिस्ट प्राथमिक स्तर के नेत्र व दृष्टि विशेषज्ञ होते हैं, यद्यपि ये फिजिशियर नहीं होते हैं। ये मुख्यतया चश्में तथा कॉन्टेक्ट लैंसेज के निर्धारण (Prescription), आंखों की नियमित देखभाल हेतु सलाह आदि का कार्य करते हैं।

नेत्रों की चिकित्सा व शल्यक्रिया करने वाले फिजिशियन या सर्जन को ऑप्थैल्मोलॉजिस्ट (Opthalmodgist) कहा जाता है। इसी प्रकार ऑप्टिशियन भी आई-केयर सिस्टम का महत्त्वपूर्ण अंग है, किन्तु वह चिकित्सक नहीं होता। यह एक तकनीकी विशेषज्ञ है जो ऑप्टोमेट्रिस्ट अथवा आप्थैल्मोलॉजिस्ट द्वारा दिए गए प्रिस्क्रिप्शन के आधार पर चश्मों के लेंस, फ्रेम, कॉन्टेक्ट लेंसेज तथा नेत्रों की देखभाल से संबंधित ऐसे ही अन्य उपकरणों का निर्माण व परीक्षण करने का कार्य करता है।

(6) फिजियोथैरेपी : यह एक चिकित्सा पद्धति है जिसके अन्तर्गत रोगी का इलाज व्यायाम, प्रकाश, ताप, तनाव, घर्षण, मालिश आदि विधियों के प्रयोग से किया जाता है अर्थात् भौतिक या यांत्रिक बल के प्रयोग से किया जाता है। इसके अन्तर्गत बैचलर ऑफ फिजिऑथैरेपी, डिप्लोमा इन फिजिऑथैरेपी, मास्टर इन फिजियोथैरेपी आदि कोर्सेज उपलब्ध है। शहरी दिनचर्या के कारण निरन्तर बढ़ते शारीरिक रोगों के कारण फिजियोथैरोपिस्ट की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है।

(7) पर्यावरण-विज्ञान (Envirnmental Scienes) : इसके अन्तर्गत पर्यावरण के रासायनिक, भौतिक व जैविक अंगों का अध्ययन किया जाता है, साथ ही उनकी अर्न्तक्रियाओं का भी अध्ययन किया जाता है। पर्यावरणीय नीति, योजना व प्रबंधन के क्षेत्रों में विशेषज्ञों की मांग निरन्तर बढ़ रही है।

(क्रमशः)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

चाम्पावत हाथीसिंह

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

राजा रायसिंह 1571 से 1612 ई. तक बीकानेर के छठे शासक रहे। वे एक शक्तिशाली योद्धा थे। उन्होंने अकबर की ओर से दक्षिण भारत की कई लड़ाइयां लड़ी। उनके लिए कहा जाता है कि 'उनके घोड़े की काठी ही उनका सिंहासन थी।' बीकानेर की गद्दी पर बैठने की अपेक्षा उनका अधिकांश समय रणभूमि में व्यतीत होता था। महाराणा प्रताप को अकबर के समक्ष हाजिर होने की अफवाह पर उन्हें (राणा को) सावचेत करने वाले अकबर के नवरत्न दरबारी कवि पृथ्वीराज राठौड़, राजा रायसिंह के छोटे भाई थे। एक बार राजा रायसिंह दक्षिण की युद्ध यात्रा पर थे। वहां उनके थार प्रदेश में पाई जाने वाली झाड़ी 'फौग' दिखी। राजा उस फौग की झाड़ी को बाहों में भरकर भावुक हो गए और कहा 'अरे फौग तुझे यहां किसने भेजा है। मैं तो अकबर के आदेश से यहां आ गया हूं।' अकबर के पुत्र जहांगीर का राज्याभिषेक राजा रायसिंह की उपस्थिति में हुआ था।

राजा रायसिंह की अनिच्छा के बावजूद उनके ज्येष्ठ पुत्र दलपतसिंह उनकी मृत्यु के उपरान्त बीकानेर के शासक बन गए। वे दो वर्ष तक ही बीकानेर राज सिंहासन पर रहे। उनके छोटे भाई सूरसिंह ने जहांगीर से खुद के लिए राज सिंहासन प्राप्त करने का आदेश करवा लिया एवं दलपतसिंह को निष्कासित करने के लिए सूरसिंह की सहायतार्थ जहांगीर ने जिया-उल-दीन के नेतृत्व में विशाल सेना भेजी। राजा दलपतसिंह ने मुगल सेना का डट कर मुकाबला किया एवं अन्ततः चाटुकार सामन्तों की अविश्वसनीय मण्डली द्वारा धोखा किए जाने से उन्हें पकड़ कर जिया उल दीन द्वारा अजमेर में कैद करवा दिया और सूरसिंह राजा बन गए।

बीकानेर के पदच्युत राजा दलपतसिंह ने 1614 ई. के अगले चार महीने बन्दी के रूप अजमेर कारागार में काटे जहां उन्हें सुदृढ़ सैनिक पहरेदारी में रखा गया। एक दिन राजा ने कारागार की खिड़की से बाहर एक शूरवीर योद्धा को घोड़े के काफिले के साथ उधर से निकलते देखा जो मारवाड़ के हरसोलावा (नागौर) का ठाकुर हाथीसिंह था तथा अपने ससुराल जा रहा था। बहादुर राजपूत को देखकर राजा ने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की परन्तु ठाकुर हाथीसिंह ने कहा कि वापसी में मिलेंगे। तब दलपतसिंह ने लम्बी सांस छोड़े हुए कहा कि भाई तुम तो स्वतंत्र हो क्यों एक बन्दी की चिन्ता करोंगे। मेरे भाई बीका राठौड़ भी मुझे छुड़ाने नहीं आए, तुम तो मारवाड़ के चम्पावत राठौड़ हो मेरी सहायता क्यों करोंगे? इस व्यंग्य से हाथीसिंह का राठौड़ी भाईपा एवं रजपूति अर्न्तचेतना जाग उठी।

अब क्या था; मारवाड़ के राठौड़ ने बीकानेर के राजा को छुड़ाने के लिए अपने कुछ ही सहायकों के साथ कारागार पर धावा बोल दिया एवं राजा को छुड़ाकर ले जाने में सफल हो गए। परन्तु अजमेर के सूबेदार की हजारों की सेना ने उनका पीछा किया और ठाकुर हाथीसिंह के छोटे से दल को घेर लिया। ठाकुर एवं राजा सहित सब लोग विषम परिस्थिति के बावजूद रजपूती का खेल खेलते हुए रण क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए। आठ दिन बाद राजा दलपतसिंह की मृत्यु का समाचार भटनेर (बीकानेर का हनुमानगढ़ किला) पहुंचा जहां राजा की छह रानियों ने उनकी पगड़ी के साथ सत् का वरण किया। वहां उन सतियों की हथेली छाप का स्मारक आज भी विद्यमान है और बीकानेर के किले जुनागढ़ में हाथीसिंह की वीरता के कारण हाथीपोल तक घोड़े पर सवार होकर जाने का विशेषाधिकार केवल चाम्पावत राठौड़ों को प्राप्त है। यह थी रजपूती की एक मिशाल राठौड़ हाथीसिंह चाम्पावत हरसोलाव की जो एक अनजान को भाई समझा एवं अपने लौकिक गन्तव्य के लिए जाने से पूर्व बीच राह में ही क्षत्रियत्व दिखा स्वर्गवासी हो गया। ये हाथीसिंह हरसोलाव के गोपालदास जी के पुत्र एवं वीर बल्लुजी चांपावत के छोटे भाई थे जिनकी वीरता के चर्चे इतिहास प्रसिद्ध हैं।

समाज बंधुओं ने की सहायता

विगत 11 सितम्बर को सिरोही जिले के जैला निवासी नाथूसिंह एवं उनके पुत्र धनसिंह का सड़क दुर्घटना में देहांत हो गया। धनसिंह मात्र 25 वर्ष के थे एवं उनके 18 माह का पुत्र एवं 3 माह की पुत्री है। समाज के युवाओं ने सोशल मीडिया पर अभियान चला कर उनके लिए 3,26,000 रुपए एकत्र किए एवं 14 नवम्बर को दोनों बच्चों के नाम सावधि जमा (एफ.डी.) बनाकर सुपुर्द की।

महेसाणा प्रांत का स्नेहमिलन

गुजरात के महेसाणा प्रांत के उत्तरदायी स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन 25 नवम्बर को विसनगर में आयोजित हुआ। स्नेहमिलन में आगामी माह के कार्यक्रमों पर चर्चा की गई।

नैणिया व बुडकिया में प्रा.प्र.शि. संपन्न

22 से 25 नवम्बर तक नागौर संभाग के नैणिया एवं जोधपुर संभाग के बुड़किया में बालकों के प्रा.प्र.शि. संपन्न हुए। नैणिया शिविर का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने किया। इस शिविर में नैणिया, ढूढ़िया, खानपुर, कंवलाद, कोला डूंगरी, परबतसर, ललाणा कलां, हथेली, पलसाना, भादवा, नाडा की ढाणी आदि गांवों के शिविरार्थी शामिल हुए। नैणिया के बजरंग सिंह, प्रतापसिंह, रविन्द्रसिंह, महावीरसिंह आदि ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के विदाई उद्बोधन में शिविर प्रमुख गजेन्द्रसिंह आऊ ने यहां सीखे क्षत्रियत्व के गुणों एवं किए गए अभ्यास को नियमित करने का आग्रह किया।

बुड़िकया में आयोजित शिविर का संचालन चन्द्रवीरसिंह देणोक ने किया। इस शिविर में बुड़किया, आसरलाई, सेतरावा, बेलवा, पंचवटी छात्रावास, जयभवानी नगर जोधपुर आदि स्थानों से शिविरार्थी शामिल हुए। शिविर की व्यवस्था सरपंच लालसिंह के निर्देशन में समाज बंधुओं ने की। शिविर के समापन पर स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक बनाए गए।

नैणिया

बुडकिया

उदयपुर में मासिक स्नेहमिलन

उदयपुर शहर प्रांत का मासिक स्नेहमिलन 25 नवम्बर को कृष्णा विहार में प्रहलादसिंह भटवाड़ा के घर संपन्न हुआ। स्नेहमिलन में निर्भयसिंह ने नशा मुक्ति, गोविदसिंह सोडावास ने राजपूति संस्कार, बालूसिंह कानावत ने संगठित होकर मतदान करने पर जोर दिया। शिवदानसिंह जोलावास ने संगठन की आवश्यकता एवं मीनाक्षी बेमला ने नारी शक्ति की मजबूती पर अपनी बात कही। अगला स्नेहमिलन आगामी 22 दिसम्बर को सेक्टर 13 में रखना तय किया गया।

ओसियां प्रांत का स्नेहमिलन

जोधपुर संभाग के ओसियां प्रांत का दो दिवसीय स्नेहमिलन 24 व 25 नवम्बर को बेदु में सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के निर्देशन में आयोजित स्नेहमिलन में प्रांत के स्वयंसेवकों ने प्रांत के संघ कार्यों की समीक्षा की। केन्द्रीय कार्यकारी ने कहा कि संघ से निरन्तर जुड़े रहने के लिए आवश्यक है कि हम माननीय संघ प्रमुख श्री के निरन्तर सम्पर्क में रहें। हमारा संघ से सम्पर्क ही हमारे संघ जीवन की प्राण वायु है। इसके अभाव में संघ जीवन की निरन्तरता संभव नहीं है। हमारा किसी न किसी कार्यक्रम में उपस्थित रहना एवं अपनी क्षमतानुसार संघ कार्य में लगे रहने के साथ-साथ केन्द्र से सम्पर्क सतत आवश्यक है।

डेरिया में चिंतन बैठक

शेरगढ़ प्रांत के डेरिया-मेरिया पंचायत में 18 नवम्बर को समाज के प्रबुद्धजनों की एक चिंतन बैठक आयोजित की गई जिसे संबोधित करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने झनकार के एक सहगायन के माध्यम से समाज के भूत, वर्तमान एवं भविष्य के बारे में संघ का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। क्षात्र संस्कृति को आचरण में ढालने के लिए आवश्यक अभ्यास हेतु संघ की कार्य प्रणाली की महत्ती आवश्यकता को समझाया। कार्यक्रम में 22 नवम्बर से बुड़किया में प्रस्तावित प्रा.प्र.शि. को लेकर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है कि डेरिया गांव में युवाओं की सक्रिय टीम है जो समय-समय पर सामाजिक आयोजन करवाती रहती है।

(पृष्ठ एक का शेष)

संघर्ष... धैर्य रखकर इंसान बनने की, क्षत्रिय बनने की लगन को लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ युवकों में साहस, उत्साह और उमंग के साथ में कर्मठता, भाव प्रधानता, अध्यात्म, विचार शीलता आदि का समन्वय करते हुए अपने मार्ग पर मंथर गति से चल रहा है। ऐसे काम की गति मंथर ही हुआ करती है। सिविल सेवा की परीक्षा दो-चार साल की तैयारी से पास की जा सकती है लेकिन संघ का काम दो चार साल में संभव नहीं। इसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता है और संघ धैर्य पूर्वक क्षात्र संस्कारों और चरित्र का सींचन लगातार कर रहा है। हम समाज को जितना केन्द्र में रख पाएंगे उतना ही इस काम में सहयोगी बन पाएंगे। इसके बिना क्षात्रधर्म या राष्ट्र पीछे रह जाते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हमें कमाना नहीं चाहिए। लेकिन कमाने की विद्या सिखाने का काम समाज में बहुत सारे लोग कर रहे हैं लेकिन धैर्यपूर्वक क्षात्र धर्म की विद्या देना, बच्चों के साथ खेलना, उनका हित चिंतन करना, भविष्य सुधारने का काम संघ का है। संघ में कैरियर का अर्थ पेट तक सीमित नहीं है, सत्ता और धनोपार्जन तक सीमित नहीं है। इन सबकी भी महत्ती आवश्यकता है लेकिन हम सब आवश्यकता से अधिक इन सबमें लगे रहते हैं। भूख से ज्यादा खाते है, आवश्यकता से अधिक वस्त्र रखते हैं, जरूरत से बेहतर मकान बनाना चाहते है और पूरा जीवन इनमें ही बीत जाता है। संघ का मार्ग इन बालकों को इन सबसे बाहर निकालकर समाज और राष्ट्र के लिए सोचना सीखना है और यह क्षात्र धर्म के बिना संभव नहीं है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षात्र धर्म की पाठशाला है। हम सबमें ऐसी ही इंसानियत, क्षात्रियत्व एवं राष्ट्रीयता की भावना जागे मैं ऐसी उम्मीद करता हूं। **माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर वालुकड़ा में 13 नवम्बर को आयोजित स्नेह मिलन में माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त संदेश।**

वालुकड़ा... शिविर में सूरत एवं मुंबई से प्रवासी राजस्थानी स्वयंसेवक भी शामिल हुए। स्वागत एवं विदाई संदेश के साथ-साथ प्रतिदिन प्रभात में मंगल

संदेश के रूप में पूरे शिविर में संघ प्रमुख श्री का मार्गदर्शन मिलता रहा। 15 नवम्बर की रात्रि को तलवारबाजी, लाठी दाव, गरबा, दोहे, छंद वाचन आदि के रात्रि कार्यक्रम में शिविरार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 16 नवम्बर को प्रातः सभी के भाल पर तिलक लगाकर संघ प्रमुख श्री ने आगामी शिविर में स्वागत के लिए विदाई दी।

नारोली... मैं 'मैं' न रहकर 'संघ' बन जाऊं एवं स्वधर्म पर आरूढ़ रहूं यही महत्ती आवश्यकता है। इस आवश्यकता को हमने शिविर में समझने का प्रयास किया। हमें प्राप्त हुई यह समझ सदैव बनी रहे इसके लिए घर जाकर शाखाएं शुरू करें एवं संघ का नियमित स्मरण करें। जब भी संघ का बुलावा आए, स्वीकार कर सहभागी बनें। इस महान कार्य को करने के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है, स्वस्थ मन की आवश्यकता है इसलिए अपने आहार-विहार को पवित्र बनाएं। अपने महत्व को समझें एवं संघ ने जो हमारा अपने आपसे परिचय करवाया है उसे ना भूलें।

संपादकीय

संगठनों की एकता : कितनी व्यावहारिक?

विधानसभा चुनावों में राजनीतिक दलों द्वारा कम टिकटें दिए जाने पर समाज में मांग उठने लगी कि समाज के सभी संगठनों को एक होना चाहिए। एक होकर प्रयास करना चाहिए आदि-आदि। लेकिन विचारणीय यह है कि क्या ऐसा संभव है? क्या पहले हुए ऐसे प्रयासों के परिणाम सुखद रहे हैं? क्या यह मांग व्यावहारिक भी है? गहराई से सोचें तो संगठन अलग-अलग क्यों बनते हैं यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। इस प्रश्न का उत्तर यह स्पष्ट कर देगा कि क्या हमारी मांग व्यावहारिक है? वास्तव में अलगाव का कारण क्या है? क्यों कोई व्यक्ति किसी संगठन से पृथक हो अलग संगठन बनाता है? क्यों एक ही विषय के लिए अलग-अलग संगठन अस्तित्व में आते हैं? यदि हम इन प्रश्नों का विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि विचार भिन्नता, अहंकार की तुष्टि, स्वार्थ आदि अनेक कारण हैं जो इस प्रकार के बिखराव को अस्तित्व में लाते हैं। एक ही आवश्यकता को केन्द्र में रखकर साथ आने वाले लोग कालांतर में उस आवश्यकता के बने रहने पर भी अलग-अलग राह पकड़ लेते हैं तो इसका सीधा सा कारण नजर आता है कि अलग होने का कारण समाज की वह आवश्यकता नहीं बल्कि साथ चलने को उद्यत हुए लोगों का आपसी स्वार्थ या अहंकार का टकराव है। प्रायः हम देखते हैं कि कुछ समय पूर्व बनने वाले संगठन, सभा या समिति के पदाधिकारी कुछ समय बाद अलग-अलग संगठन, सभा या समिति के पदाधिकारी हो जाते हैं और फिर इस प्रकार के अलगाव को लेकर बने संगठनों से हम अपेक्षा करते हैं कि वे एक हो जाएं तो यह आकाश कुसुम जैसी कल्पना है और ऐसी कल्पनाएं प्रायः निराश हुआ करती हैं, विगत वर्षों के उदाहरण हमारे सामने हैं। जिनके मूल में अपनी व्यक्तिगत विचार भिन्नता, अहंकार या स्वार्थ के कारण उपजा अलगाव है उनसे उस विचार भिन्नता, अहंकार या स्वार्थ को दूर किए बिना एक होने की आशा या अपील करना एक प्रकार से दुरुह कल्पना है। समाज की किसी परिस्थिति विशेष में हो सकता है वे कुछ समय के लिए साथ हो जाएं लेकिन अल्प समय में ही वह साथ बिखराव में बदल जाता है क्योंकि उनके अंतर में बैठी विचार भिन्नता, स्वार्थ एवं अहंकार अपना असर दिखाए बिना नहीं रहते। वास्तव में तो इन सभी विकृतियों के रहते साथ आने की चाह एक भावनात्मक अपील मात्र होती है और यह पुष्ट बात है कि परिपक्व विचार के सहारे के बिना उपजी भावनाएं अल्पकालिक होती हैं और ऐसी अल्पकालिक भावनाओं पर हल्के-फुल्के आक्रमण भी उन्हें शांत कर देते हैं। लेकिन इस विश्लेषण का यह अर्थ कदापि नहीं कि हमें एक होने की बात नहीं करनी चाहिए या प्रयास नहीं करना चाहिए। लेकिन संगठनों को एक करने की अपेक्षा स्वयं को एक होना चाहिए। अपने विचारों को समाज के विचार में समाहित करने का अभ्यास करना चाहिए। अपनी भावनाओं को उन्नत कर उनके विरूद्ध आने वाले विचारों को पहचानना चाहिए। मेरा अहंकार कब-कब मेरे इस उन्नत भाव को चोटिल करता है उसे पहचान कर चोट करनी चाहिए। मेरा कौनसा स्वार्थ मेरे उन्नत भाव को पथभ्रष्ट करता है उससे विरत होने को उद्यत होना चाहिए। पूज्य तनसिंह जी ने समाज के समक्ष इसी एकता की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया जिसमें व्यक्ति स्वयं उन विभाजक तत्वों का स्वयं में अन्वेषण करता है और फिर उन पर चोट करता है। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने अपने इस आंदोलन को 'ज्ञान प्रदीप्त हृदय का आंदोलन' कहा। हृदय से उठे पवित्र भाव की अपने विचारों द्वारा पुष्टि आवश्यक है। उस पुष्टि के लिए विचारों का पोषण आवश्यक है और उस पोषण के लिए कर्मशीलता आवश्यक है, क्रांति आवश्यक है, अपने आपको बदलने की तैयारी आवश्यक है और वैसी ही तैयारी का मार्ग है संघ का अभ्यास एवं वैराग्य का मार्ग। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ सभी संगठनों को एक होने की बात पर बहुत बल नहीं देता, कभी समाज की तात्कालिक आवश्यकता विशेष पर साथ चलने में सहायक बनने का प्रयास अवश्य करता है लेकिन भली प्रकार जानता है कि यह लंबा चलना संभव नहीं है। यह जंगल में लगी आग की सदृश परिस्थिति है जिसमें शेर, भेड़िया, हरिण आदि साथ खड़े दिखते हैं लेकिन यह साथ लंबा चलना संभव नहीं है इसलिए अनवरत रूप से विचारों की भिन्नता को न्यूनतम कर एक लक्ष्य की ओर प्रवाहित करने का अभ्यास करवाता है। अपने व्यष्टिगत स्वार्थ को समष्टि में समाहित करने का अभ्यास करवाता है। अपने व्यष्टिगत अहंकार को समष्टिगत स्वाभिमान के प्रति तिरोहित करने का अभ्यास करवाता है और इस अभ्यास में बाधक बनने वाली विपरीत चाहों से वैराग्य करवाता है। यही शाश्वत एकता का मार्ग है और इसी से अटूट एकता संभव है। अतः आए हम संगठनों को एक होने की अपील करने की अपेक्षा स्वयं को एक करने की प्रक्रिया का हिस्सा बनें ताकि कभी आवश्यक होने पर मेरा स्वयं का स्वार्थ या मेरा स्वयं का समझदारी का दावा समाज की एकता में बाधक न बन पाए। यदि ऐसा होगा तो फिर हम एकता की मांग करने वालों की हलचल का केन्द्र किसी राजनीतिक पार्टी का टिकट हासिल करना नहीं रहेगा या अपने किसी राजनीतिक आका के कृपा कटाक्ष पाना भी नहीं रहेगा बल्कि हमारे समाज की वे उज्ज्वल परम्परा होंगी जिनके कारण हम अपने आपको राजपूत या क्षत्रिय कहलाने में गौरव अनुभव करते हैं। इसलिए संगठनों से एकता की चाह को छोड़ें एवं स्वयं को किसी एक राह में समाहित करने की चाह को प्रबल बनाए, आपकी ऐसी हर चाह को संबलन प्रदान करने के लिए पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त राजमार्ग सदैव आपका स्वागतोत्सुक रहता है।

अंतर और बाहर की यात्रा

विगत दिनों एक समाचार पत्र में छपा कि मेडिकल साईंस में ऐसी तकनीक विकसित हो रही है कि किसी व्यक्ति को एक कमरे में गुजारा जाएगा और पता चल जाएगा कि उसके शरीर में क्या-क्या विसंगति है। इस समाचार को पढ़कर मुझे हमारे यहां परम्परागत रूप से होने वाले उन नाड़ी वैद्य जी का स्मरण हो आया जो नाड़ी देखकर शरीर की व्याधियों का अनुमान लगा लेते थे। एक बार आधुनिक मेडिकल साईंस के एक एम.बी.बी.एस. के सामने इस बात का उल्लेख किया तो वे मुस्कराने लगे जैसे मैंने कोई असंभव बात कही हो। लेकिन इस बात का इंतजार अवश्य है कि जब मेडिकल साईंस किसी ऐसे यंत्र की खोज करेगा जब उसे मनुष्य की नाड़ी के स्पर्श करते ही पूरे शरीर को जाना जा सकेगा। तब शायद वे एम.बी.बी.एस. दूसरे भाव से मुस्कराएंगे। लेकिन यहां इस बात का उल्लेख करने का उद्देश्य उनकी मुस्कुराहट नहीं है बल्कि यह स्पष्ट करना है कि हमारा भारत अंतर की यात्रा का समर्थक रहा है और वर्तमान पश्चिम बाहर की यात्रा का। अंतर की यात्रा परमेश्वर की यात्रा है और बाहर की यात्रा संसार की।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

खरी-खरी

चुनावी दौर में उतरते चोले

चुनावी दौर चल रहा है। नेता लोग अपने विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहे हैं। कुछ नेता अपनी समझदारी के चोले से बाहर निकल कर इस माहौल में स्वभावतः प्रकट हो रहे हैं तो कुछ नेता अति समझदारी दिखाते हुए बनावटी व्यवहार में अपने स्वभाव को छिपा रहे हैं। जो नेता अपने स्वाभाविक अहंकार वश सीधे मुंह बात भी नहीं करते वे अति विनम्र हो मतदाता को पूज रहे हैं तो कुछ नेता चुनावी संघर्ष के दबाव को नहीं झेल पाने के कारण सभी प्रकार की बनावट को भूलकर स्वभावतः प्रकट हो रहे हैं। मेवाड़ में ऐसे ही एक नेताजी ने चुनावी दबाव एवं अहंकार के प्रभाव में महिलाओं तक को अपना वोट कुएं में डालने की नसीहत तक दे डाली। वैसे इन नेताजी ने अपने ही पक्ष में एक चिर प्रतिद्वंद्वी को हराने के लिए विपक्षी राजनीतिक दल को वोट देने की अपील भी कर डाली। इसी क्षेत्र में एक नेताजी ने अपनी श्रेष्ठता के अहंकार में बनावटी व्यवहार के सभी चोले उतार फैंके और घोषणा कर दी कि ब्राह्मण के अलावा धर्म के बारे में कोई नहीं बोल सकता। उनके अनुसार ब्राह्मण ही धर्म का ज्ञाता होता है। वास्तव में तो उनकी बात सही है कि ब्राह्मण ही धर्म का ज्ञाता होता है लेकिन कौनसा ब्राह्मण? जिस ब्राह्मण की वे बात कर रहे हैं वह नहीं बल्कि वह ब्राह्मण जो एक जंगली लुटेरे से वाल्मिकी बनकर भगवान राम के जीवन को आद्योपांत जान लेता है और घटना के घटने से पहले उसका विवरण लिख देता है। जिसे भगवान राम भी साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हैं। वह ब्राह्मण जो तपस्या के बल पर ब्रह्मतत्व में स्थित होकर वेदों के शीर्ष मंत्र की रचना कर विश्वामित्र बनता है। वह ब्राह्मण जो मछुआरिन के गर्भ से पैदा होकर महाभारत जैसे विशाल ग्रंथ सहित समस्त भारतीय शास्त्रों को लिखित रूप में प्रस्तुत करता है। वह ब्राह्मण जो तुलसी में प्रकट हुआ, कबीर में प्रकट हुआ, रहीम में प्रकट हुआ। वह ब्राह्मण जो नारद में प्रकट हुआ, वशिष्ट में पैदा हुआ, हनुमान में पैदा हुआ। वह ब्राह्मण जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में परिभाषित किया। वह ब्राह्मण जो बुद्ध एवं महावीर द्वारा परिभाषित हुआ। निश्चित रूप से वही ब्राह्मण धर्म को जानता है लेकिन क्या उन नेताजी का आशय यही था तो निश्चित रूप से यह भी कहा जा सकता है कि नेताजी के वक्तव्य का उस ब्राह्मण से लेना-देना नहीं है। वे तो उस आरक्षित ब्राह्मण की बात कर रहे हैं जिस आरक्षण को उनके पूर्वजों ने वंशानुगत रूप से हासिल कर धर्म की ठेकेदारी अर्जित की और उसी ठेकेदारी के बल पर समाज के दबे कुचले वर्ग को धर्म से विरत कर दिया। अब क्यों कि वह ठेकेदारी छूट रही है इसलिए गाहे बगाहे अंदर की वह बात प्रकट हो ही जाती है और वहीं बात चुनावों के संघर्ष के दबाव में प्रकट हो गई। ऐसे ही स्वभाविक रूप से ये बातें प्रकट होती रहेंगी लेकिन हमारी सावधानी ही इससे बचा सकती है और हमें सावधान रहना है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	24.12.2018 से 27.12.2018 तक	रामदेव जी मंदिर **कचनारा** नाहरगढ़ तह. सीतामऊ, (मंदसौर)। मध्यप्रदेश। **सम्पर्क सूत्र :** महेन्द्रसिंह फतहगढ 9926685051 दयालसिंह सेदरा 9977800497
2.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**देगराय** (जैसलमेर)। देवीकोट, मूलाना, भैंसड़ा, सांकड़ा से बस उपलब्ध है।
3.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**फोगेरा** (शिव)। बाड़मेर से हरसाणी मार्ग पर फोगेरा, शिव से भी फोगेरा के लिए बस उपलब्ध है।
4.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	संस्कार पब्लिक स्कूल, **आहोर।** जिला-जालोर
5.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**हाडला** (बीकानेर)। कोलायत व बीकानेर से साधन।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2018 से 28.12.2018 तक	वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास, कृषि मंडी के सामने **बालोतरा।**
7.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 30.12.2018 तक	**घाटमपुर** (उ.प्र.)। रेल द्वारा कानपुर। वहां से बसें उपलब्ध।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	26.12.2018 से 29.12.2018 तक	जयमलकोट, **पुष्कर।**
9.	प्रा.प्र.शि.	27.12.2018 से 30.12.2018 तक	न्यू आर्यवीर अकादमी, **ताल,** जिला रतलाम (म.प्र.)। ताल हेतु जावरा, आलोट, महिदपुर से रेल, बस, टैक्सी उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** वीरेन्द्रसिंह ताल - 9039576006, मदनसिंह विक्रमगढ़ आलोट 9893606416
10.	मा.प्र.शि.	01.01.2019 से 07.01.2019 तक	**कसूम्बी** (नागौर)।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ चार का शेष)

अंतर...

संसार परमेश्वर का ही बनाया हुआ है इसलिए अंतर की यात्रा करने वाले के लिए संसार अप्राप्य नहीं रह जाता इसलिए एक वैद्य जब अपने दायित्व को परमेश्वर का सौंपा दायित्व समझकर अंतर की यात्रा की ओर गतिमान होता हैं तो उसमें संसार की वे सब क्षमताएं उतरती हैं जो अपेक्षित हैं। बाहर की यात्रा और अंतर की यात्रा में यह अंतर है कि अंतर की यात्रा में क्षमताएं उतरती है और बाहर की यात्रा में क्षमताओं को खोजा जाता है। अंतर की यात्रा में क्षमताएं प्राप्त होती हैं और बाहर की यात्रा में प्राप्त की जाती हैं। यहां प्राप्त करने और प्राप्त होने में अंतर है। मिलना या प्राप्त होना पात्रता पर निर्भर करता है। पात्रता आते ही वे स्वतः मिल जाती हैं। ये देने वाले की इच्छा पर निर्भर होता है लेकिन प्राप्त करने में लेने वाले की इच्छा प्रभावी होती है। क्षमतावान बनने की चाह महत्त्वपूर्ण होती है। बाहर की यात्रा में यही चाह महत्त्वपूर्ण होती है। इसीलिए क्षमताओं का दुरुपयोग होता है। हमारे यहां भी राक्षसी संस्कृति लोगों द्वारा ऐसी ही क्षमताओं को अर्जित करने के लिए घोर तपस्या और तदुपरांत जो प्राप्त हुआ उसके दुरुपयोग के उदाहरण मिलते हैं। इसलिए बाहर की यात्रा में जो प्राप्त होता है वह खुला होता है, एक बार शोधित और परीक्षित होने के बाद उसे सज्जन दुर्जन कोई भी उपयोग कर सकता है लेकिन अंतर की यात्रा में केवल पात्र लोगों को ही क्षमताएं मिलती है और उनके हस्तांतरण के भी बहुत कम उदाहरण मिलते है। पात्रता अर्जित करने पर ही वे हस्तांतरित होती थी इसलिए भारत की और लौटना है, सुख और समृद्धि की लौटना है तो अंतर की यात्रा की ओर गतिमान होवें, बाहर की क्षमताएं स्वतः उतरने लगेगी ऐसा हमारे महापुरुषों ने अपने अनुभवों को शास्त्रों में उल्लेखित कर बताया है और इस दृष्टिकोण से सोचेंगे तो पाएंगे कि हमारे प्राचीन भारत में वह सब था जिसे पश्चिम का विज्ञान आज प्रकट कर रहा है बस अंतर इतना है कि वह केवल पात्र लोगों को मिलता था, यहां सबको सुलभ हो रहा है और परिणाम भी इसका हम देख रहे हैं।

मैं कुछ कर्म करूं

क्षत्रिय के घर मेरा जन्म हुआ उसी समय यह बात तय हो गई कि मुझे कुछ करना है। मुझे मेरे दायित्व का बोध कराया गया कि इस संसार में, मैं सामान्य नहीं हूं, खास हूं और मेरा काम भी खास है। मैं इस तड़फते जगत में महत्त्वपूर्ण हूं इसलिए मुझे सोये हुए नहीं रहना है। जब कोई खास सोया हुआ रहता है तब सारी व्यवस्था बिगड़ने लगती है। तभी भाव जगता है कि मैं कुछ कर्म करूं। चारों ओर मेरे ही लोग अपनी कौम की मर्यादा को उजाड़ने में आनन्द ले रहे हैं और हंसी के पात्र बन रहे हैं। जिन कारणों से कौम पतन के मार्ग पर बढ़ी उन्हीं कारणों को दोहराने का काम कर रहे हैं। तब मैं क्या करूं? मैं जो मार्ग मेरी कौम के लिए धरातल स्तर पर कार्य करे व कौम के प्रति सत्तोगुणीय जातीय भाव रखे उस मार्ग का अनुसरण करूं। जिसमें मेरा व मेरी कौम दोनों का वास्तविक हित समाया हुआ हो। मैं संसार में चल रहे दिखावों, भाषणों व आकर्षणों से दूर रहकर अपना अस्तित्व मिटाकर अपना जीवन अपने मार्ग में समर्पित करूं, इसकी आवश्यकता मुझे और संसार दोनों को है। लोगों ने निजी कार्यों को महत्त्व देकर कर्तव्य कर्म को साईड जोब समझ लिया, जिसका परिणाम जीवन की निर्रथकता व दिन प्रतिदिन पतन की राह पर चलना है। परन्तु मैं इन विषकन्या रूपी बातों से दूर रहूं व स्वयं को कर्तव्य की राह से जोड़े रखूं, यदि बात स्वधर्म के प्रेमी, महाराणा सांगा, प्रताप, चन्द्रसेन, दुर्गादास आदि महापुरुष सीखा गए हैं। उनके त्याग से प्रेरणा लेकर मैं कुछ कर्म करूं। चारों ओर पिता पुत्र के, भाई-बहिन के, पति-पत्नी के रिश्ते टूटते जा रहे हैं, अमर्यादा अपना विस्तार कर रही है। पाश्चात्य संस्कृति अपनी फसल बो रही है, इसमें मैं कहीं भागीदार न हो जाऊं, ऐसी स्थिति में मैं अपने जीवन का सद्‌पुयोग करने के लिए प्रतिदिन कर्तव्य की कर्मभूमि पर जाकर अपनी ऊर्जा को लगाऊं व अपने साथियों को सुनी हुई, सीखी हुई व अनुभव की हुई क्षात्रधर्म की बात को सुनाऊं। यह कार्य अभी इसी दौर में शुरू कर दूं। मुझे किसी दूसरे को बदलना नहीं है, मुझे यह ध्यान रखना है की कहीं अच्छा वातावरण बनने में, मैं रोड़ा न बन जाऊं, इसीलिए मैं एक आदर्श पथिक (स्वयंसेवक) बनूं व अपने मार्ग, अपने मार्गदृष्टा, अपने दायित्व व अपने ध्येय का स्मरण करता रहूं। मैं अर्थात प्रत्येक क्षत्रिय।

डिप्टीसिंह, राजगढ़

धर्मशास्त्र 'गीता'

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जरी महाराज

विश्व को सर्वप्रथम धर्म और धर्मशास्त्र प्रदान करने वाला भारत आज धर्मशास्त्रविहीन भटक रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी से ही भारत में अनेक धार्मिक संस्थाओं का गठन होता रहा है, किन्तु प्रत्येक संस्था ने हिन्दू समाज को पतन के गर्त में ही गिराया है। हिन्दुओं की जितनी संख्या उन्हें विरासत में मिली थी, उसके आधे से भी अधिक हिन्दुओं को इन संगठनों ने खो दिया। इनमें से बहुत से ईसाई हो गए मुसलमान हो गए, अब बौद्ध होते जा रहे हैं। इन संगठनों के पास अनुयायियों को आश्वस्त करने का कोई उपाय नहीं है क्योंकि इनके पास 'धर्म' की परिभाषा नहीं है, धर्म की कोई तालिका नहीं है, कोई 'धर्मशास्त्र' नहीं है।

धर्म की रक्षा के नाम पर संगठित इन संस्थाओं ने धर्म के जिन प्रतीकों को अपनाया, मात्र रूढ़ियां थीं, जैसे-गाय, गंगा, मंदिर इत्यादि। मन्दिर हमारे देवस्थल हैं, आदरणीय हैं न कि धर्म। धर्म क्या है? उसे धारण कैसे करें? धर्मशास्त्र कौन? इसका संज्ञान इन्हें नहीं है। किसी संगठन ने गो-रक्षा का आन्दोलन चलाया, किसी ने गंगाजल में प्रदूषण के प्रश्न पर हिन्दुओं को संगठित किया, किसी ने मंदिर के प्रश्न को राष्ट्र की अस्मिता से जोड़ा, कभी गणेश-पूजन के आयोजन हुए, कहीं दुर्गा पूजा के, कभी एक प्रतीक तो कभी दूसरा, अब कोई कार्यक्रम नहीं तो किंकर्तव्यविमूढ़ बैठे हैं।

कतिपय संगठन पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तिकाओं में यह लिखने लगे हैं कि हिन्दू कोई धर्म ही नहीं है, वह तो उदात्त जीवन-शैली है, जीवन-दर्शन है- एक व्यवस्था है। जब यह संसार में जीने-खाने की व्यवस्था मात्र है, वह तो संसार में प्रत्येक कबीले के पास है, आपसे भी अच्छी व्यवस्थाएं उनके पास हो सकती हैं। आप से व्यवस्था सीखने कोई क्यों आए? जिसको जहां अच्छी व्यवस्था दिखेगी, जाएगा, फिर धर्मान्तरण के लिए आप आसूं क्यों बहाते हैं? इन संगठनों के कुछेक नेताओं ने इस भयावह त्रासदी के गंभीर परिणामों को समझने का प्रयास किया है। वे इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं कि भारत के पास एक 'धर्म' था, जिसका सम्पूर्ण धर्मशास्त्र 'श्रीमद्भगवद गीता' है।

धर्मशास्त्र के रूप में प्रायः लोग 'वेद' का नाम लेते हैं किन्तु वेद पृथ्वी पर बाद में अवतरित हुए, 'गीता' उससे भी पहले परमात्मा के श्रीमुख का सीधा प्रसारण है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं- अर्जुन। इस अविनाशी योग को मैंने सृष्टि के आदि में सूर्य से कहा। सूर्य ने इसे अपने पुत्र आदि मनु से कहा। मनु ने जायमान होने से हम-आप मनुष्य कहलाते हैं। विवस्वत मनु की संतान सभी मनुष्य सूर्यवंशी हैं, इनमें से कोई आदिवासी-अनादिवासी नहीं है। उद्गम की दृष्टि से सभी सूर्यवंशी हैं। राजवंश में जन्म लेने से राजवंशीय राजपूत क्षत्रिय कहलाए। इनमें से जो साधन-भजन करने लगे, ब्रह्मतत्त्व को जाना वे ब्रह्मर्षि हो गए, ब्राह्मण कहलाए। जैसे जिसने कार्य किया, नामकरण होता गया। मूलतः सभी मनुज हैं। उन्हीं महाराजा मनु ने परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान को अपने पिता सूर्य से प्राप्त किया, अपनी स्मृति में धारण किया, स्मृति की परम्परा देते हुए अपने पुत्र महाराजा इक्ष्वाकु से कहा। उनसे राजर्षियों ने जाना। उस महत्त्वपूर्ण काल से यह अविनाशी योग लुप्त हो चला था। 'वही पुरातन योग अर्जुन। मैं तेरे प्रति कहने जा रहा हूं क्योंकि तू प्रिय सखा है, अनन्य भक्त है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं तुझे न दे सकूं।' इस प्रकार द्वापर में उस पुरातन योग का पुनरावर्तन हुआ। वस्तुतः यह सृष्टि के आरम्भ में ही कही गई थी, इसीलिए विशुद्ध मनुस्मृति 'श्रीमद्भगवद् गीता' है। 'स्मृति' ही धर्मशास्त्र है यह सत्य है, लेकिन विशुद्ध मनुस्मृति 'श्रीमद् भगवद् गीता' है।

महाराजा मनु दीर्घजीवी थे। जीवन के उत्तरार्ध में उन्होंने एक जलप्लावन देखा। एक नाव के माध्यम से स्वयं बचे, जीव-जगत् को बचाया। उन्होंने सृष्टि पर पुनर्विचार किया। भगवान् ने मत्स्य रूप में उन्हें दर्शन दिया, वेद प्रदान किया। मनु ने उसका नाम 'श्रुति' अर्थात् श्रवण योग्य विचार। 'गीता' को उन्होंने 'स्मृति' की संज्ञा दी, सदैव स्मरण में बनी रहे। स्मरण है तो साधन आचरण में ढलता है। 'गीता' तब भी स्मृति थी, आज भी 'गीता' स्मृति है। यह विशुद्ध 'मनुस्मृति' है। वेद 'गीता' का विस्तार है। 'गीता' से इतर वेद में कुछ भी नहीं है, इसलिए आदि धर्मशास्त्र 'गीता' ही है। अर्जुन तक स्मृति परम्परा अक्षुण्ण थी। उन्होंने स्वीकार किया-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।।
(गीता, 18/73)

'भगवान्। मोह से उत्पन्न मेरा अज्ञान नष्ट हुआ। मैं स्मृति को प्राप्त हुआ हूं। मैं आपके आदेश का पालन करूंगा।' उसने शस्त्र उठा लिया, युद्ध हुआ, विजयी भी हुई। सम्पूर्ण धर्म साम्राज्य की स्थापना हुई। सम्पूर्ण धर्मात्मा युधिष्ठिर नरेश के रूप में अभिषिक्त हुए और धर्मशास्त्र के रूप में 'श्रीमद् भगवद् गीता' पुनः प्रसारण में आ गई। श्रीमद् भगवद् गीता का पुनरावर्तन भारत में हुआ, इसलिए भारतीय मूल के लोगों का मूल धर्मशास्त्र श्रीमद् भगवद् गीता है।

महर्षि वेदव्यास ने श्रुतज्ञान की परम्परा में एक क्रान्तिकारी सुधार किया। उन्होंने पूर्वजों का समस्त ज्ञान लिपिबद्ध कर दिया। वेद, महाभारत- उसके मध्य माला में सुमेरू की तरह अध्यात्म-शास्त्र श्रीमद् भगवद् गीता, महाभारत के चरित्र-नायक भगवान् श्रीकृष्ण और उनकी संत-परम्परा का जीवनवृत 'भागवत', इतना ही इन महापुरुष की कृतियां हैं। फिर तो व्यास एक पदवी हो गई। कहते हैं ब्रह्मसूत्र का प्रणयन तथा पुराणों का सम्पादन व्यास ने किया। कुछ भी हो, सब कुछ लिख देने के पश्चात् उन महापुरुष ने बताया इनमें शास्त्र कौन है? उन्होंने सात श्लोकों में 'श्रीमद् भगवद् गीता'की स्तुति की-

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।
(म.भा., भीष्मपर्व, 43/1)

'गीता' भली प्रकार मनन करके हृदय में धारण करने योग्य है। यह पद्मनाभ भगवान् के श्रीमुख की निःसृत वाणी है। परमात्मा के श्रीमुख का सीधा प्रसारण है, **'किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः'**- फिर अन्य शास्त्रों के संग्रह की क्या आवश्यकता है? सृष्टि में धर्म के नाम पर जितने भी संगठन प्रचलित हैं, किसी न किसी महापुरुष के पीछे सिमटा समाज है, उनके अनुयायियों का संगठन है और सभी महापुरुष 'गीता' के ही मूल तथ्यों पर खड़े हैं। 'गीता' सबका मूल है, सबका उद्गम है, सृष्टि के आदि में परमात्मा की वाणी है। विश्व के सभी महापुरुषों ने जिस भगवान् को बताया, स्वयं उन परमप्रभु के श्रीमुख की वाणी है। उसी के एक-एक अंश को विश्व के हर महात्मा ने देश-काल, परिस्थिति के अनुसार समाज को बताने का प्रयास किया। टुकड़ों में समझाने और विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने से क ही सत्य अनेक रूपों में और कभी-कभी तो परस्पर विरोधी प्रतीत होने लगता है। धर्म के नाम पर गठित विभिन्न सम्प्रदायों, मजहबों, पंथों के आपसी मनोमालिन्य का यही कारण है।

उदाहरण के लिए, भगवान् ने 'गीता' में बताया कि एक आत्मा ही सत्य है। उसे विदित कर लेने पर पुनर्जन्म नहीं होता। अध्याय 8/16 में है **'मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।'** -वह मुझे जानकर मुझमें ही स्थित हो जाता है। वह सदा रहने वाला जीवन, सदा रहने वाली शान्ति प्राप्त कर लेता है फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होता। भगवान महावीर स्वामी कहते हैं- कैवल्य ज्ञान प्राप्त कर लेने पर पुनर्जन्म नहीं होता। भगवान् बुद्ध कहते हैं- अपने निज स्वरूप को जान लेने पर पुनर्जन्म नहीं होता। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहते हैं- पुनर्जन्म नहीं होता। महात्मा ईसा भी कहते हैं- पुनर्जन्म नहीं होता। हर महापुरुष तो वही कह रहा है; किन्तु कब नहीं होता? प्राप्ति के पश्चात्। न कि आज, जिसने साधन-भजन शुरू ही नहीं किया उसके लिए आवागमन का चक्र चलता ही रहेगा। यदि पुनर्जन्म नहीं है तो भाग्य की दुहाई क्यों देते हैं? जब हमने पहले कुछ किया ही नहीं तो अच्छे-बुरे परिणाम क्यों होते रहते हैं?

अस्तु, भिन्न-भिन्न महापुरुषों की परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली वाणियों में समन्वय के लिए सत्य को मूल रूप में तथा समग्र रूप में जानने के लिए विश्व के मानव मात्र का ध्यान उनके मूल धर्मशास्त्र 'गीता' की ओर हम आकृष्ट करना चाहते हैं जिससे न केवल उनका समाधान होगा अपितु संसार भर में व्याप्त शोषण, अन्याय, आतंक और कुरीतियों से अखिल मानवता को राहत मिलेगी।

'गीता' मूलतः संस्कृत भाषा में है जो उस समय की लोकविश्रुत भाषा थी। कालक्रम से अब संस्कृत हमारी-आपकी भाषा नहीं रही, इसलिए 'गीता' के आशय को यथावत् समझने के लिए 5200 वर्षों के पश्चात् पहली बार 'गीता' की विश्व वन्दनीय व्याख्या 'यथार्थ गीता'- जो भारत की सभी भाषाओं, विदेश की प्रमुख भाषाओं में अनूदित होने के साथ ही आडियो-वीडियो कैसेटों और वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। 'यथार्थ गीता' की दो-तीन आवृत्ति अवश्य करें, जिसने झोपड़ी से महलों तक, अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, काले-गोरे, स्त्री-पुरुष, हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, आदिवासी, अनादिवासी में विभक्त मानव मात्र को एक प्रभु की संतान घोषित कर सबको एकता और समता के धरातल पर ला खड़ा कर दिया है।

धर्म और शास्त्र किसी विरले महापुरुष के क्षेत्र की वस्तु है, जिसे साधनात्मक सौपानों से चलकर उस स्तर का वह महापुरुष ही समझ पाता है। अधकुचरे लोगों के द्वारा शास्त्र की व्याख्या बन्दर के हाथ में उस्तरा लगने जैसा है। 'गीता' के ही एक श्लोकांश की गलत व्याख्या ने भारत को गुलाम बनाकर रख दिया कि **'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं' (गीता, 4/13)** - भगवान् कहते हैं - चार वर्ण हमने बनाए। इसी को आधार बनाकर मध्यकालीन व्यवस्थाकारों ने व्यवस्था दी कि शूद्र सेवा करे, सारहीन अन्न खाए, फटा-पुराना वस्त्र पहने, पेड़ों के नीचे रहे, मिट्टी के बर्तन में खाए। शूद्र घर में सोए तो नरक जाएगा, गाय का दूध पीता है तो नरक में जाएगा। शादी में भी कमर से ऊपर वस्त्र न पहने, घोड़े पर न चढ़े। जोधपुर में शूद्र घोड़े पर बैठ गया तो मारपीट हो गई। जयपुर के तालाब में शूद्र चले गए तो हंगामा हो गया। कहीं मूर्ति धुलवाई गई तो कही नया मन्दिर बनाना पड़ा। उस समय के राजा-महाराजाओं को बताया गया कि यह भगवान् की व्यवस्था है, यही सनातन धर्म है। छुआछूत, पानी, भोजन, कपड़ा और रहन, सहन ही धर्म बन बैठा। वस्त्र शरीर की सुरक्षा का उपकरण है, कवच है, अण्टार्कटिक के बर्फीले जलवायु में जन्म हुआ तो शीत-निरोधी वस्त्र धारण करना पड़ेगा। अरब में रेगिस्तान की गर्म हवा के थपेड़ों से बचने के लिए कान और सिर को वस्त्र से ढकना होगा। वस्त्र उड़ न जाए इसलिए सिर पर एक गेडुली (रिंग) रख लेते हैं जिसे 'इल्डानी' कहते हैं। उसमें दोनों ओर रस्सियां लटकती रहती है। ऊंट की सवारी करते समय हाथ नकेल की रस्सी में उलझा रहता है। उस समय शिरस्त्राण को उड़ने से रोकने के लिए लटकती हुई रस्सी गले से बांध लेते हैं। राजस्थान के लोग अंधड़ आने पर सिर की पगड़ी के दो-चार लपेट निकालकर गले में बांध लेते हैं। जहां कहीं अतिवृष्टि होती है, वहां के निवासी छाता लेकर चलते हैं, वाटर-प्रूफ वस्त्र धारण करते हैं। यह कपड़ा-वेशभूषा धर्म कब से हो गया। किसी ने दाढ़ी बढ़ा ली तो किसी ने मूंछों को एक आकार दे दिया- यह कौन-सा धर्म हो गया। अपने पैतृक व्यवसायों में जीवन-यापन करना धर्म बन बैठा। शस्त्र केवल क्षत्रिय उठा सकता था, दूसरा कोई उठाए तो नरक में जाएगा - भारत का यह निःशस्त्रीकरण न मुसलमानों की देन है, न अंग्रेजों की। यह मध्यकालीन स्मृतिकारों की देन है। उन्हें भय था कि इस व्यवस्था से क्षुब्ध समाज कहीं उन पर आक्रमण न कर दे। इस निःशस्त्रीकरण का ही परिणाम था कि थोड़े से आक्रान्ताओं ने लाखों-लाखों भारतीय नर-नारियों को बंदी बनाकर मौत के घाट उतार दिया अथवा विदेशी बाजारों में गुलामों की तरह बेच दिया। **(क्रमशः)**

भारत के लिए एक देश एक कानून

संघीय शासन प्रणाली की आवश्यकता

भारत में संसदीय शासन प्रणाली के विगत 70 वर्षों में राजनेताओं एवं विभिन्न दलों के नैतिक पतन, भाई भतीजावाद एवं भ्रष्टाचार से देश की शासन व्यवस्था चरमरा गई है, गरीब और शांतिप्रिय आम नागरिक की सुरक्षा एवं न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाई है। क्या इस व्यवस्था पर पुनर्विचार नहीं किया जाना चाहिये? प्रांतीय दल सदैव केन्द्र सरकार से टकराव का रुख अपना कर जनता को सुशासन देने के बजाय केवल आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहते हैं जिसका दिल्ली NCR, J&K व आंध्रप्रदेश आदि ताजा उदाहरण हैं। इन दोनों के बीच आम जनता पिस रही है जिसके लिए प्रजातंत्र का कोई मतलब नहीं है। आज यह पूर्ण आवश्यकता है कि विधायकों और सांसदों के लिए शिक्षित होना अनिवार्य हो, वे कम से कम स्नातक हों। संविधान में संशोधन कर 'एक देश एक कानून लागू' होना चाहिए और इसके लिए सरकार में दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। अमेरिका में संघीय शासन चुनाव प्रणाली है जिसमें राज्यों को पर्याप्त स्वायतता है लेकिन 'हैड ऑफ दी स्टेट' का चुनाव यानि प्रेजीडेन्शियल प्रत्याशियों का चुनाव भी पहले अपनी दलीय लोकप्रियता और योग्यता (open debate with rival candidate on T.V. only without any public rellies) के आधार पर होता है। कोई भी स्वयंभू नेता उस पद के लिए दावा नहीं कर सकता जैसा कि भारत में लगभग प्रत्येक क्षेत्रीय दल का नेता प्रधानमंत्री पद के लिए महत्वाकांक्षा पाले रहता है और बन भी जाता है जब कि इनमें से कई तो ठीक से हिन्दी भी नहीं बोल पाते, देश की विभिन्न तरह की जटिल समस्याओं को समझना तो बहुत दूर की बड़ी बात होगी। कुल मिला कर यही स्थिति राज्य के मुख्यमंत्रियों पर लागू होती है जैसे बिहार जैसा बड़ा राज्य। यह कैसी विडम्बना है कि एक अयोग्य नेता के चयन का परिणाम पूरे राज्य और देश को भुगतना पड़ता है। फिर हमारे यहां तो विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग जातियां, भाषाएं, धर्म, सम्प्रदाय और तरह-तरह के आरक्षणों का जंजाल है जिसमें न्याय और योग्यता के लिए कोई स्थान नहीं है। देश से पहले ही Brain Drain काफी हो चुका है अब भी हो रहा है जिसके परिणाम स्वरूप देश दोयम दर्जे का हो रहा है। एस.सी. एस.टी. रिजर्व सीट पर उस क्षेत्र के सवर्ण या अन्य समुदाय को चुनाव लड़ने का अधिकार सदा के लिए खत्म रहता है तो इससे कितनी प्रकार की विसंगतियां, कुण्ठाएं और पक्षपातपूर्ण प्रताड़ना मय वातावरण बन चुका है। आज अगर देश में जात-पांत से ऊपर उठ कर 'एक देश एक कानून' लागू किया जावे तो न तो साम्प्रदायिक दंगे होंगे, न जातीय झगड़े होंगे। ये जातिवाद, भाई भतीजा वाद सब समाप्त हो जाएगा अगर देश में समान नागरिक कानून समान रूप से लागू हो। उसमें धर्म, जाति, लिंग का कोइ भेदभाव नहीं होना चाहिए। देश में सबसे ज्यादा अपराध, झगड़े करवाने का श्रेय देश की पुलिस को जाता है जिसको नियंत्रित करने का कोई कानून नहीं है। 1860 की IPC आज भी यथावत लागू है। अंग्रेजों ने अपने हित साधने के लिये जो IPC बनाई थी उसी को आजाद भारत के नेताओं ने अपना हित साधने के लिए यथावत लागू कर दिया। अब वक्त आ गया है एक पुलिस कमीशन का गठन हो जो पुलिस की गतिविधियों पर नियंत्रण रख सके।

आज के नेताओं की कथनी और करनी में बहुत अन्तर है, लम्बे-लम्बे लच्छेदार भाषण देने में वे निपूण हैं और भोली जनता जात-पांत, भाई भतीजावाद, क्षेत्रवाद, भाषा धर्म के भुलावे में आकर फंस जाती है और देश की व्यवस्था व प्रगति बाधित होती है। जबकि Presidential From of governance (Federal system) में सीनेट में किसी अन्य दल के बहुमत होनें पर भी राज्याध्यक्ष (Prisident) के पास किसी भी निर्णय को लागू करने के लिए विशेषाधिकार Veto Power होता है जिससे देश अनिर्णय की परिस्थिति से बाधित नहीं होता। अतः अब समय आ गया है कि संविधान में संशोधन करके भारत Parlimentary System को संघीय शासन प्रणाली में परिवर्तित किया जाए जिससे सभी प्रकार के विभाजनकारी कारणों का निदान हो और हमारे प्रतिनिधि केवल योग्यता के आधार पर चयनित हो कर देश का नेतृत्व करें। इस विषय पर गम्भीरता से विचारना और संविधान में परिवर्तन करना समय की मांग है ऐसा मेरा मानना है। अतः विज्ञ पाठकों के सुझावों का मैं स्वागत करूंगा और इसके लिए जनमत तैयार करने हेतु सहयोग की अपेक्षा करता हूं।

गिरिराज सिंह लोटवाड़ा

हे! धीव जैसांण री!

हे! धीव जैसांण री!
कई लख नारियां जलमसी इण धरा,
पण समोवड़ तूझ रै होई न हौवसी।
किया है अमर तैं
दोय पख ऊजळा
पतिव्रत धरम नै पाळियो अंत तक।
रूठिया कईयक रूठसी कई पण
तिहारौ रूठणौ अमर है इळा पर।
बाळपण जांणली वडेरा ख्यात तूं
जादमां सुजस नै राखियौ ऊजळो
तांण निज छाती गगन सम ताकतौ
अंजस कर कर गरब तिण गोरहर
ऊभौ है आजलग तिहारै पांण ई।
लूवां री लपट जिथ लौरियां सुणावै
आंधियां रजी रै कणां सूं न्हावै
मनावै मोद सूं मावडी माडधर
थपकिया देयनै सुलावै विखै में।
पगां उरबाणा भुरट जिथ चुभै/खुभै
कोड कर घणैरा धोरियां बुलावै।
इण धर जाई ऊमादे ऊजळी
ऊजळी राखवां प्रीत री रीतड़ी।
हे ! माड री लाडली!
पीव सूं प्यारौ कोई नीं जगत में
पण तैं पीव तज प्रण नै मानियौ
निभायौ कौल तैं छत्रवट कुरब रौ
जूंण आखी तूं आई नीं सांमनै।
आवियौ हरख सूं बधाय लै जावण
'बारहठ आसौ' कोड कर तिहारा
साच नै कैवतां चूकतौ कींया वौ
खळकाई साच री मारगां विचाळै
आज तक लोक में औळियां अमर है
पीव अर मांण में किसै नै तजैला।
झट तैं कैयौ कै
मांण ई रखूंला !!
मरूंला!!!
पण नीं झूकूलां आंण हित।
हे! ऊमादे!
साचाणी तिहारौ साचपथ बैवणो
मान नै राखणौ कठण ही वाट पण
तूं मग बूवी इण अडिग रैय अैकली
तिहारै जिसी नीं हुवी अर नीं
हौवसी।
रीसणा घणाई भांगिया वसु पर
अमल लै
कईयक दारू दपट नै
पण तव रीसणौ भांगणौ सबांसूं
न्यारौ निराळौ हो इण जगत में।
सिधाया राव जद छोड निज देह नै
बगतसर ऊमादे तूं ओथ पूगी
बोली नहीं कद बैण तूं राव सूं
बिताई जूंण पण मुक्ख नीं देखियौ
सैवट भांगियौ रीसणौ रीझमन
झळां रै विचाळै
तूं ई जा बैठगी
अमर सथ कोड सूं साम रो करण नै।
हे! कोट कीरत री!
जद-जद मंडसी मेळा माडधर
आंण अर मांण रै सारूं कोड सूं
नांव तव लईजसी हरावळ हमेसा
गरब सूं चालसी लोक तिण बातां।

महेन्द्रसिंह छायण

एक अपील समाज के राजनेताओं के नाम

आदि काल से वर्तमान काल तक तक मुखिया का स्थान प्रधान रहा है। चाहे परिवार का मुखिया हो या समाज का अथवा राज्य या देश का। बिना प्रमुख के न परिवार ठीक से चलता है न ही समाज का कल्याण होता है न राज्य उन्नति कर सकता है न ही देश सुदृढ़ हो सकता है। इसलिए परिवार को मजबूत करने के लिए समाज के कल्याण के लिए, राज्य की उन्नति के लिए व देश के विकास व सुदृढ़ता के लिए एक अच्छे कुशल, मुखिया की जरूरत होती है जो उनकी आशा के अनुरूप खरा उतकर उनकी बात सुने, समस्या का निदान करे तथा भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर आगे कदम बढ़ावे। साथ ही सबकी बात सुनता हुआ उनके दुःख-दर्द के आंसुओं को पोंछता हुआ उन्हें हर पल, क्षण विश्वास देता हुआ, आशा बंधाता हुआ, सबको साथ लेकर आगे बढ़े। कदम बढ़ावे। उसे आज की भाषा में नेता तथा जिसे पार्टी या राज्य का आश्रय मिल जाए, राजनेता कहा जाता है। कोई भी समाज हो सब अपने-अपने समाज के प्रमुखों से कुछ आशा रखते हैं। उन्हें अपना समझते हैं। पार्टी व सिद्धान्त का त्याग कर समाज की खातिर उनका साथ देते हैं। उन्हें जिताने में भरसक प्रयास करते हैं। उन्हें तन-मन-धन से यथा शक्ति सहयोग करते हैं, मदद करते हैं। अपना नेता, राजनेता अथवा मुखिया मान उनका सम्मान व आदर करते हैं। सभी समाज के मुखिया या राजनेता अपने-अपने समाज के लिए आन्दोलन करते हैं। कुर्बानी देते हैं। सरकार को झकझोर देते हैं? इसका ज्वलंत उदाहरण विगत का गुर्जर समाज का आन्दोलन ताजा है। अन्य समाज के लोग एकजुट हो ओबीसी में आरक्षण लेने में अपने समय में सफल रहे हैं। लेकिन विडंबना हमारे समाज की है। जो स्त्री-पुरुष, युवा स्व जाति के नेता या राजनेता के लिए हरदम तत्पर रह दिन-रात एक कर जिताने का प्रयास करते हैं। आगे बढ़ाने में मददगार होते है। यहां तक कि जीतने के बाद मंत्री पद लेने में समाज का सहयोग लेता है। सरकार का गठन वर्तमान में समाज के धरातल के आधार पर चयन कर दिया जाता है। ऐसे में सारी प्रक्रिया समाज आधारित होती है। यदि समाज से उन्हें निकाल दिया जाए या असहयोग किया जाए तो उनका अस्तित्व व वजूद नगण्य हो जाता है। ऐसे में यदि वह समाज के लोगों का कार्य न करे। उनकी बात न सुने। उन्हें अपना न समझे। उनकी उपेक्षा करें तो आखिर समाज का कार्यकर्ता किसके पास अपनी पीड़ा रखेगा? दुःख-दर्द सुनाएगा? जब बाड़ ही खेत को खाने लग जाएगी तो खेत बचेगा कहां? जब समाज के लोग घुटन महसूस करेंगे। अपनी व्यथा से नहीं उभरेंगे। स्थानीय नेता-राजनेता तक पहुंचकर अपनी बात रखता है और वह उसको तवज्जा नहीं देता तो क्या अन्य समाज के राजनेताओं के पास जाकर अपनी वेदना, दुःख का बखान करें, जिनके लोगों से वह परेशान हो राजनेता के पास पहुंचता है। यदि राजनेताओं ने समाज के स्थानीय नेताओं की उपेक्षा करनी शुरू कर दी और स्थानीय नेता की पकड़ गांव, पंचायत में इस कारण शिथिल पड़ गई कि उनकी सुनने वाला कोई नहीं तो वह दिन दूर नहीं होगा जब राजनेता इस समाज के नाम से अपनी कुर्सी नहीं बचा पावेंगे और शीघ्र ही जमीन पर आ जावेंगे। ऐसी स्थिति में किसी कवि द्वारा चुरु के संदर्भ में कही गई पंक्तियां सत्य साबित होंगी-

कांदा खाया कमधजा, घी खाया गोलां...।
चुरु चाली ठाकरां, बाजंता ढोलां।।।

तो इसी भांति मंत्री पद का सुख बिना समाज की आस्था, सहयोग के नहीं भोगा जाएगा। इसलिए समाज के सभी नेता, राजनेताओं से अपील है कि वे समाज की उपेक्षा करना छोड़, उनके मर्म को जानें तथा उसे दूर करने का हर संभव प्रयास करें चाहे उनके लिए अपनी कुर्सी का त्याग ही क्यों न करना पड़े? तभी नेता, राजनेता, आम समाज के लोगों की आन-बान-शान बच सकेगी? अन्यथा समाज बद से बदतर स्थिति में पहुंचता जाएगा और बचाने वाला फिर कोई नहीं रहेगा।

पेपसिंह कल्लावास

दुःखद अवसान

वैरीसालसिंह कालेवा

संघ के स्वयंसेवक **वैरीसालसिंह कालेवा** का 19 नवम्बर को सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। पारलु तहसील पचपदरा जिला बाड़मेर में शारीरिक शिक्षक के रूप में कार्यरत वैरीसालसिंह पहली बार पीपलिया महादेव पादरू में अक्टूबर 1992 में आयोजित शिविर में संघ के सम्पर्क में आए। मा.प्र.शि. नागाणा से वे नियमित रूप से आने लगे। इनके बड़े भाई हीरसिंह भी संघ के स्वयंसेवक है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं परिवार को यह आघात सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

व्यवसायी प्रकोष्ठ की कार्यशाला संपन्न

संघ के मुम्बई प्रांत में 18 नवम्बर को व्यवसायी प्रकोष्ठ की कार्यशाला संपन्न हुई। सूरजवाड़ी, पांजरापोल, मुंबई में संपन्न इस कार्यशाला में मुंबई में रहने वाले प्रवासी राजपूत व्यवसायी बंधु एवं मुंबई की शाखाओं के स्वयंसेवक शामिल हुए। कार्यशाला को संबोधित करते हुए बिजनेस कोच योगेश पंवार ने सफल व्यवसायी बनने के गुर बताए। उन्होंने कहा कि अपने व्यापार में कमाए धन को व्यापार में ही लगाएं। अपने व्यवसायी जीवन में छोटे-मोटे सकारात्मक बदलाव लाकर सफल व्यवसायी बनें। व्यवसायी प्रकोष्ठ के केन्द्रीय प्रभारी पवनसिंह बिखरणिया ने व्यवसायी समाज बंधुओं को संगठित होकर अपनी ऊर्जा एवं क्षमता को समाज हित में उपयोग करने की बात कही। सुरेश जैन, दिनेश भट्ट आदि ने भी अपने अनुभव साझा किए। समाज के वरिष्ठ व्यवसायी भी मार्गदर्शन हेतु शामिल हुए। कार्यक्रम के साथ-साथ दीपावली स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें महिलाओं की भी भागीदारी रही। लगभग 600 व्यवसायी बंधुओं ने अपनी भागीदारी निभाई।

मेजर शैतानसिंह की पुण्यतिथि

भारत-चीन युद्ध के समय रेजांगला में चुशूल चौकी पर अदम्य साहस एवं वीरता का परिचय देने वाले परमवीर मेजर शैतानसिंह की पुण्यतिथि जोधपुर स्थित पावटा चौराहे पर स्थित उनके स्मारक पर 18 नवम्बर को मनाई गई। सेना की अगुवाई में मनाई गई पुण्यतिथि में एरिया कमांडर मेजर जनरल चौहान, स्टेशन कमांडर ब्रिगेडियर गांगुली सहित सेना के विभिन्न अधिकारियों एवं सेवानिवृत अधिकारियों ने पुष्प चक्र भेंट किए। सेना के अतिरिक्त मेजर साहब के पुत्र नरपतसिंह सहित अनेक गणमान्य नागरिक भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। चौपासनी स्कूल के छात्र भी उपस्थित रहे। संघ के स्वयंसेवकों ने भी पुष्पांजलि अर्पित की।

महाकवि पीथल की जयंती मनाई

क्षत्रिय सभा बीकानेर द्वारा 24 नवम्बर को महाराजा रायसिंह बीकानेर के छोटे भाई एवं अकबर के नौ रत्नों में से एक महाकवि पृथ्वीराज (पीथल) की 469वीं जयंती मनाई गई जिसमें राजपूत, चारण, रावणा राजपूत, राजपुरोहित आदि समाजों के प्रबुद्धजनों ने उनके तेल चित्र पर पुष्पांजलि कर कृतज्ञता प्रकट की। इस अवसर पर ब्रिगेडियर जगमालसिंह, नारायणसिंह, बजरंगसिंह रॉयल आदि वक्ताओं ने महाकवि की निर्भीकता, स्पष्टवादिता, काव्य प्रतिभा आदि की चर्चा की। उनके द्वारा महाराणा को लिखे गए पत्र एवं उनकी प्रमुख कृति 'बेली कृष्ण रुकमणी' की भी चर्चा की गई।

हनुवंत शाखा का अधिकतम संख्या दिवस

जोधपुर शहर की हनुवंत राजपूत छात्रावास शाखा का अधिकतम संख्या दिवस 25 नवम्बर को मनाया गया जिसमें सामूहिक खेल, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम रखे गए।

बनासकांठा प्रांत का स्नेहमिलन

संघ के बनासकांठा प्रांत के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन 18 नवम्बर को सकलाणा में आयोजित हुआ। उपस्थित समाज बंधुओं से संघ एवं समाज विषयक चर्चा की गई एवं शाखा लगाने की जानकारी दी गई। क्षत्रिय संघशक्ति (गुजराती) के ग्राहक सदस्य बनाए गए। सभी ने सामूहिक भोजन ग्रहण किया।

धानेरा में प्रतिभा सम्मान समारोह

धानेरा के राजपूत प्रगति मंडल धानेरा का प्रतिभावान छात्र-छात्रा सम्मान समारोह एवं पारिवारिक स्नेहमिलन समारोह 25 नवम्बर को आयोजित हुआ। समारोह के अध्यक्ष पी.टी. जाडेजा अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल राजपूत युवा संघ ने उपस्थित समाज बंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्यक्रमों में सहभागी बनने का आह्वान किया। साथ ही क्षात्रधर्म को जीवन में धारण करने की बात कहते हुए प्रेरणादायी वक्तव्य दिया। अजीतसिंह कुणघेर ने संघ के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने संघ के दर्शन की आवश्यकता को प्रतिपादित किया। लाछीवाड़ा महंत रामभारती ने व्यसन एवं दुष्प्रवृतियों से दूर रहने की बात कही। अर्जुनसिंह सामलवाड़ ने सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने की बात कही। पी.टी. जाडेजा ने धानेरा में समाज भवन के लिए 5 लाख रुपए देने की घोषणा की। एक समाज बंधु ने दो लाख इक्यावन हजार रुपए देने की घोषणा की। कार्यक्रम के समापन पश्चात् सभी ने भोजन ग्रहण किया।

आशावरी वार्षिक सम्मेलन संपन्न

अलवर स्थित राजौरगढ़ में 11 नवम्बर को आशावरी सेवा समिति के सौजन्य से प्रतिवर्ष की भांति आशावरी वार्षिक सम्मेलन संपन्न हुआ। सम्मेलन में समताराम जी नांद, नारायण दास जी सरसैनी , मुकुंददास जी वृंदावन आदि संतों के सानिध्य में बड़गूजर, सिकरवार एवं मडाढ़ क्षत्रिय राजवंश पुस्तक का विमोचन किया गया। आरएस राघव (अध्यक्ष राजपूत सभा उत्तराखंड), गिरिराजसिंह लोटवाड़ा, डॉ. रणदीप मढ़ाड, जगदीश राघव, देवेन्द्र मढ़ाड, दलवीरसिंह चौहान, भूपेश राजावत, पृथ्वीसिंह नरूका, राधेश्याम गोयल, डॉ. अंजु कल्याणवत आदि के आतिथ्य में प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया एवं सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई। विशिष्ट उपलब्धियों के लिए जिया कंवर को स्केटिंग में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड हेतु, यशश्री को हेमर थ्रो में राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतने हेतु एवं अपराजिता को लॉन टेनिस में राष्ट्रीय स्तर पर चयन हेतु सम्मानित किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com , Web site:- www.shrikys.org